न्यू एपॉस्टॉलिक चर्च
भारत

धन्यवाद दिवस 2026

प्रिय भाइयों और बहनों,

जब हम रविवार, 4 अक्टूबर को अपने चर्च का धन्यवाद दिवस मनाने की तैयारी कर रहे हैं, तो आइए हम उस प्रेरणादायक वचन को थामे हुए इस उत्सव में शामिल हों, जिसने पूरे वर्ष हमारा मार्गदर्शन किया है: **"मत डर; केवल विश्वास रख।"** (मरकुस 5:36)

याईर उस समय भय और विश्वास के दोराहे पर खड़ा था, जब उसने ये शब्द सुने। जिस बात का उसे सबसे अधिक भय था, वह मानो सच होती दिख रही थी। फिर भी, यीशु ने उसे अपने ऊपर विश्वास बनाए रखने के लिए कहा। उसकी परिस्थितियाँ ऐसी थीं कि उसके पास डरने की हर वजह थी, लेकिन यीशु ने उसे विश्वास में दृढ़ बने रहने के लिए कहा।

शायद धन्यवाद की शुरुआत भी यहीं से होती है : विश्वास के साथ।

जब हम अपने जीवन में मिलने वाली आशीषों को साफ–साफ देख पाते हैं, तब धन्यवाद देना आसान हो जाता है। लेकिन धन्यवाद केवल उन अच्छी बातों को गिनने तक सीमित नहीं है, जो हमारे जीवन में हुई हैं। इसकी शुरुआत इस विश्वास से होती है कि हमारी परिस्थितियाँ चाहे जैसी भी हों, परमेश्वर हमारे निकट हैं। यीशु मसीह के द्वारा, उसने हमें वह सब दिया है, जिसे हम कभी स्वयं प्राप्त या अपने लिए जुटा नहीं सकते थे। मसीह ने क्रूस पर वह कार्य पहले ही पूरा कर दिया, जिसे हमारा कोई भी बलिदान कभी पूरा नहीं कर सकता। परमेश्वर हमसे प्रेम करता है, इससे पहले कि हम उसे कुछ भी अर्पित करें।

यह हमारे देने के तरीके के प्रति हमारे दृष्टिकोण को बदल देता है।

हम परमेश्वर की कृपा पाने के लिए नहीं देते। हम अपने विश्वास को प्रमाणित करने के लिए भी नहीं देते। बदले में परमेश्वर को हमसे किसी चीज की जरूरत भी नहीं है। बल्कि, जब हम सोचते हैं कि हमने उससे क्या–क्या पाया है, तो हमारे मन में धन्यवाद स्वाभाविक रूप से उसे व्यक्त करने का मार्ग खोजता है।

यही बलिदान का मूल भाव है। कैटकिज़्म के अनुसार, बलिदान परमेश्वर की आराधना करने, उसे धन्यवाद देने और स्वयं को उसके अधीन करने का एक तरीका है (देखें कैटकिज़्म 13.2)। इसका अर्थ है, यह स्वीकार करना कि परमेश्वर ने हमें जो कुछ दिया है, वह उसकी ओर से है और धन्यवाद के साथ अपने जीवन में से कुछ उसे अर्पित करना। हमारा आर्थिक दान इसी बलिदान की एक अभिव्यक्ति है।

धर्मशास्त्र ने लंबे समय से देने को परमेश्वर पर विश्वास के साथ जोड़ा है। फसल की पहली उपज परमेश्वर को इसलिए नहीं दी जाती थी कि उसे इसकी जरूरत थी, बल्कि इसलिए दी जाती थी क्योंकि उसकी प्रजा यह पहचानती थी कि उन्हें ये आशीषें परमेश्वर से मिली हैं (देखें निर्गमन 23:19)। यीशु ने भी देने के विषय में कहा और बार–बार ध्यान दान की मात्रा से आगे बढ़ाकर दान देने वाले के हृदय की ओर आकर्षित किया।

हम इसे उस विधवा के उदाहरण में देखते हैं, जिसने दो दमड़ियाँ दान की थीं (लूका 21:1–4)। उसका दान आसानी से किसी की नजर में आए बिना रह सकता था। लेकिन यीशु ने उसे देखा। उसने केवल यह नहीं देखा कि विधवा ने क्या दिया, बल्कि यह भी देखा कि उसने किस मन से दिया।

हम जो भेंट अर्पित करते हैं, वह परमेश्वर के प्रति अपना धन्यवाद व्यक्त करने का एक तरीका है। कैटकिज़्म हमें याद दिलाता है कि एक विश्वासी "व्यापक अर्थ में बलिदान, अर्थात् अपना हृदय समर्पित करके" भी कर सकता है (देखें कैटकिज़्म 13.2.3)। इस प्रकार, हमारा धन्यवाद इस बात को भी प्रभावित कर सकता है कि हम अपने आप को–अपना समय, अपनी योग्यताएँ, अपना ध्यान और अपनी देखभाल–कैसे अर्पित करते हैं। यह किसी कठिनाई से गुजर रहे व्यक्ति के लिए प्रोत्साहन हो सकता है, किसी अकेले व्यक्ति के लिए भोजन हो सकता है, अपने परिवार में धैर्य रखना हो सकता है, किसी को क्षमा करना हो सकता है, भले ही यह हमारे लिए कठिन रहा हो, या

न्यू एपॉस्टॉलिक चर्च
भारत

धन्यवाद दिवस 2026

केवल उस समय उपस्थित रहने की तत्परता हो सकती है, जब किसी अन्य व्यक्ति को हमारी आवश्यकता हो।

हो सकता है कि इनमें से कोई भी चीज बहुत खास न लगे। दो दमड़ियाँ भी ऐसी ही थीं।

धन्यवाद दिवस हममें से प्रत्येक को इस बात पर विचार करने के लिए प्रेरित करता है कि परमेश्वर ने हमें जो कुछ दिया है, उसके प्रति हमारी प्रतिक्रिया क्या हो? मैं धन्यवाद के साथ परमेश्वर को क्या भेंट कर सकता हूँ? मेरा धन्यवाद, मेरे जीवन जीने, देने और सेवा करने के तरीके में किस प्रकार दिखाई दे सकता है?

जब हमारे बच्चे हमें इस तरह जीवन जीते हुए देखते हैं, तो वे बहुत अच्छी बातें सीख सकते हैं। वे सीखते हैं कि धन्यवाद और परमेश्वर पर विश्वास केवल कहने की बातें नहीं हैं। वे देखते हैं कि परमेश्वर ने हमें जो उपहार दिए हैं, वे केवल हमारे लिए नहीं हैं। वे यह भी देखते हैं कि विश्वास हमारे समय का उपयोग करने, लोगों के साथ व्यवहार करने, सेवा करने, बाँटने और जीवन जीने के तरीके को किस प्रकार प्रभावित कर सकता है।

आखिरकार, यह हमारे चर्च के उद्देश्य (मिशन) का भी एक हिस्सा हैः ऐसी आत्मीय संगति को विकसित करना, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर के प्रेम और उसकी तथा दूसरों की सेवा करने के आनंद का अनुभव कर सके।

इसलिए, जैसे–जैसे 4 अक्टूबर का दिन निकट आ रहा है, आइए हम धन्यवाद के साथ उन सभी बातों को पहचानें, जो परमेश्वर ने हमें दी हैं। उन पर भरोसा रखते हुए, हमारा धन्यवाद अपने–अपने तरीके से–जो हम उसे अर्पित करते हैं, जो हम दूसरों के साथ बाँटते हैं और जिस प्रकार हम स्वयं को समर्पित करते हैं–उसमें प्रकट हो।

हम अपने जिले के प्रेरितों और बिशपों के साथ मिलकर आपको और आपके प्रियजनों को धन्य और कृतज्ञता से भरे धन्यवाद दिवस की शुभकामनाएँ देते हैं।

शुभकामनाओं के साथ,

अरनॉड मार्टिग